ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-3* June-2020
Anthology : The Research

भारतीय संगीत का प्राचीनतम एवं आध्यात्मिक स्वरुप

The Oldest and Spiritual Form of Indian Music

Paper Submission: 15/06/2020, Date of Acceptance: 28/05/2020, Date of Publication: 30/05/2020

वन्दना जोशी
असि0 प्रोफेसर एवं परिसर विभागाध्यक्ष,
संगीत विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार मुख्यतः धर्म ही है। भारतीय संगीत कला भी आध्यात्म से जुड़ी होने के कारण उसका प्राचीनतम स्वरूप आध्यात्म ही माना गया है। संगीत की उत्पत्ति 'ओऽम' शब्द से मानी गयी है। वैदिक काल में सामवेद की रचना हुई जिसे संगीत का आधार माना गया है। प्राचीन वेद भारतीय संस्कृतिक के मूल स्रोत हैं। प्राचीन वेदों तथा उपनिषदों में संगीत और आध्यात्म का सम्बन्ध स्पष्ट दिखता है। प्राचीन कई ग्रंथों में संगीत और आध्यात्म का उल्लेख मिलता है। संगीत नाद–ब्रहम स्वरूप है तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता रहा था।

Religion is mainly the mainstay of our Indian culture. Indian music art is also associated with spirituality because its oldest form is considered to be spirituality. The origin of music is assumed to be from the word 'Om'. Samaveda was composed during the Vedic period, which is considered the basis of music. The ancient Vedas are the original source of Indian culture. In ancient Vedas and Upanishads, the relation of music and spirituality is clearly visible. Music and spirituality are mentioned in many ancient texts. Music is a form of nad-brahm and was used as an instrument for attaining salvation.

मुख्य शब्द : सामन, प्रबन्ध, धार्मिक अनुष्ठान।
Salmon, Management, Religious Rituals.

प्रस्तावना

हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार मुख्यतः धर्म ही है। अतः ललित कलाओं का उद्गम भी धर्म से माना जाता है। भारतीय संगीत कला भी आध्यातमिकता से जुड़ी होने के कारण, प्राचीनतम स्वरूप आध्यात्म माना गया है।

संगीत की उत्पत्ति 'ओऽम' शब्द से मानी गयी है। 'ओऽम' को तीन आदि शक्तियों का द्योतक माना गया है। वेदों का बीज मंत्र भी 'ऊँ' को ही स्वीकारा गया है। संगीत को हमारे आध्यात्मिक, सामाजिक एवं भावात्मक जीवन का अंग माना गया है। मानव मात्र की साहचर्यता से अलग इसके 'ईश्वरीय वाणी' भी कहा गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय संगीत का प्राचीनतम स्वरूप एवं आध्यात्मिक स्वरूप को जन साधारण के सम्मुख प्रस्तुत करना इस शोध का मूल उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

विवेचनात्मक प्रविधि।

विषय विस्तार

संगीत का उद्भव और विकास प्राचीन साहित्य, उपाख्यानों तथा लोकगीतों के काल्पनिक विवरणों में लुप्तप्रायः ही दिखता है। धर्म की दृष्टि से देखने पर हमको यह ज्ञात होता है कि चारों वेद अलौकिक संगीत की सर्वोत्तम रचनाऐं हैं। संगीत की उत्पत्ति भाषा से पहले की मानी गयी है। इसकी प्राचीनता को देखते हुए ऐसा लगता है कि मानव और संगीत एक साथ पैदा हुए हैं।

मानव अपनी जीवन शैली में अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कुछ नियमों व सिद्धान्तों का अनुपालन करता है, जो निरन्तर प्रयोग में आने से उसके संस्कार तथा संस्कारों की परिणिति होती है। धर्म जहाँ अपनी गरिमा से पृथक हो जाता है, वहाँ संस्कृति का विनाश निश्चित है। धर्म का आधार गुण संगीत है तथा पूजा, तप, जप, कीर्तन, संकीर्तन आदि संगीत के माध्यम से सहज हो जाते हैं। वैदिक काल से ही यज्ञादि अवसरों पर इसके साक्षात प्रमाण मिलते हैं। वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठान संगीत के बिना सम्पन्न ही नहीं हो सकते थे तथा वेद–मंत्रों को लय–ताल में निबद्ध करके गाया जाता था। भगवतगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना स्वरूप समझाते हुए कहा है– 'वेदानां

सामवेदोऽस्मि'– अर्थात् वेदों में सामवेद हूँ। वैदिक काल में सामवेद की रचना हुई जिसे भारतीय संगीत का आधार माना जाता है। सामवेद की ऋचाओं को ही आदि स्रोत माना जाता है।

सामवेदीय ऋचाऐं 'गायत्री' तथा 'जगती' छन्दों में निबद्ध है। दोनों ही छन्दों की उत्पत्ति 'गान' से मानी गयी है। प्राचीन वेद भारतीय संस्कृति के मूल स्रोत हैं। संगीत पूर्णतः भक्ति तथा आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ माना जाता है। प्राचीन वेद इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ऋग्वेद में ध्वनि की उदात्त, अनुदात्त व स्वरित नामक तीन अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। सामगान में उदात्त, अनुदात्त और स्वरचित इन्हीं तीन स्वरों का प्रयोग माना गया है। वैदिक संगीत में मार्गी के अतिरिक्त निबद्ध गीत तथा प्रबन्ध गीत के भेद भी पाये जाते हैं। वास्तव में संगीत एक सुदीर्घ परम्परा है। भारतीय जीवन में संगीत उस समय से व्याप्त है जब पृथ्वी का विकास भी पूर्णरूपेण विकसित नहीं हुआ था। सभ्यता के विकास के साथ–साथ संगीत भी उत्कृष्ट रूप प्राप्त करता गया। हमारे शास्त्रों के अनुसार संगीत ईश्वरीय वाणी है। ब्रहम का एक रूप है।[1]

डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार– संगीत किसी भी संस्कृति एवं सभ्यता की आत्मा है।[2]

संगीत और धर्म का समन्वय और सामंजस्य केवल वैदिक काल में ही दिखायी देता है, अन्धकार युग में तथा प्राग्वैदिक काल में इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। संगीत की उत्पत्ति के विषय में देवी–देवताओं से सम्बन्धित अनेक किंवदन्तियां हमारे ग्रन्थों में उपलब्ध होती हैं। धर्म तथा आध्यात्मिक संदर्भों में भारतीय संगीत सदा ही ईश्वर प्राप्ति का सहज माध्यम माना गया है। वैदिक संगीत की समृद्ध परम्परा भी इस तथ्य से प्रभावी है। वेदों की ऋचाओं का गेय रूप सामवेद के अतिरिक्त ब्राहमण संहिता, गांधर्व वेद, प्रतिशाख्य, याज्ञवलक्य शिक्षा, माण्डूक एवं नारदीय शिक्षा, और छन्दोग्योपनिषद् आदि ग्रंथों में वर्णित चिन्तन प्रमाण है।

भारतीय संगीत में धार्मिक आस्था एवं विश्वास का अनुपम उदाहरण है कि यहाँ स्वर, श्रुति, राग, तान एवं वाद्यों से विभिन्न देवी–देवताओं का सम्बन्ध स्थापित होता रहा है। याज्ञवल्क्य और नारदीय शिक्षा आदि में भी स्वरों के देवता, वर्ण, ऋषि आदि के नाम दिये गये हैं। ईश्वर ने केवल संगीत कला को न केवल निर्मित किया है, अपितु अपने हर क्रिया कलापों में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। विश्व भर की गुफाओं में तथा तीर्थाटन तथा मंदिरों में, विभिन्न रूपों में सांगीतिक उपकरणों के साथ ईश्वर दिखाई देते हैं। याज्ञवल्क्य और नारदीय शिक्षा आदि में भी स्वरों के देवता, वर्ण, ऋषि आदि के नाम दिये गये हैं। भगवान गणेश मृदंग के साथ सुशोभित है, भगवान शंकर के डमरू से स्वरों की उत्पत्ति मानी गयी है। वीणा–वादिनी सरस्वती के हाथ सुशोभित है तो मुरली पर श्रीकृष्ण का एकाधिकार बताया गया है। विष्णुदेव के हाथ में शंख है तो गन्धर्वों का गान तथा नारद मुनि के हाथ में एकतारा सुसज्जित है। ईश्वर का सम्पूर्ण जीवन संगीत के इर्द–गिर्द ही प्रतीत होता है। भारतीय संगीत कला पूर्णतः आध्यात्म पर आधारित है। वैदिक समय से ऋचाओं को गान की शिक्षा गुरूमुख से ही देने की परम्परा थी और इस परम्परा का निर्वाह काफी समय तक रहा। भारतीय शास्त्रीय संगीत सदैव ही आध्यात्मिकता से प्रभावित रहा है, इसलिए इसका प्रारम्भ मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य–मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में मानी गयी है। भारतीय ऋचाओं ने इसे 'पंचम वेद' या 'गन्धर्व वेद' की संज्ञा दी है। भरत मुनि द्वारा लिखे गये सर्वप्रथम संगीत के ग्रंथ नाट्यशास्त्र में भी नृत्य, नाटक और संगीत के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

संगीत रत्नाकर में भी कई तालों का उल्लेख किया गया है। उस काल में संगीत के स्वरूप को 'प्रबन्ध' कहा जाने लगा जिसके दो प्रकार थे– अनिबद्ध तथा निबन्ध प्रबन्ध।

प्रबन्ध के उदाहरण को जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविन्द' में भी देखा जा सकता है। नवीं ईसवी में मतंग द्वारा रचित वृहददेशीय नामक ग्रंथ में 'राग' को परिभाषित किया गया है। ग्यारहवीं शताब्दी में नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद में भी स्त्री तथा पुरूष रागों का वर्णन हुआ है। सोलहवीं शताब्दी में रामामात्य ने स्वरमेल कलानिधि तथा सत्रहवीं शताब्दी ईसवी में व्यंकेटमुखी ने चर्तुदण्डिप्रकाशिका नामक संगीत ग्रंथ लिखा। संगीत की प्राचीनता को देखते हुए ऐसा लगता है कि मानव और संगीत एक ही साथ ही पैदा हुए हैं। मनुष्य के लिए संगीत कला इतनी स्वाभाविक है कि जहाँ भी वर्णोच्चार होता है, संगीतमय हो जाता है।[3]

प्राचीन संगीत मार्गी और देशी दोनों प्रकार के माने गये हैं। मार्ग संगीत विशुद्ध, शास्त्रीय गायन उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित स्वरों से होता है। 'मार्ग' नाद का वैज्ञानिक सुरसाध्य और भावात्मक पहलू है।[4]

प्राचीन मुनियों का मानना है कि ब्रहमांड में ध्वनि ही ध्वनि है। जगत के सभी प्राणियों में सूक्ष्म रूप से इसी ध्वनि की धारा बहती है। इस प्रकार सम्पूर्ण जगत ही अदृश्य रूप से संगीतमय है तथा पूरा वायुमंडल भी ध्वनि की तरंगों से भरा पड़ा है।

प्रमाण के तौर पर प्राचीन सभ्यताओं के हमें जो अवशेष, मूर्तियाँ और मुद्राऐं आदि मिली हैं उनसे जाहिर होता है कि इस धरती पर हजारों वर्ष पहले के लोग भी संगीत से परिचित थे। वे गाते–बजाते थे और नृत्य भी करते थे। सबसे पुरानी सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता मानी गयी है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों से खुदाई में कई मूर्तियाँ और मुद्राऐं मिलीं, जिनमें से एक मुद्रा या सील में ढोल बजाते हुए लोग तो कई मूर्तियों और ताबीजों में नृत्य की विभिन्न भंगिमाऐं देखने को मिलती हैं। इनमें से कोई मूर्ति किसी नर्तकी की प्रतीत होती हैं। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन सभ्यता में भी संगीत विद्यमान था।

इसके बाद वैदिक युग में ऋग्वेद में एक जगह जिक्र है कि आर्यों के आमोद–प्रमोद का मुख्य साधन संगीत था। कई प्रकार के वाद्यों का आविष्कार ऋग्वेद के समय में ही हुआ था। यजुर्वेद में संगीत कई लोगों की रोजी–रोटी का साधन मालूम होता है और सामवेद को तो भारतीय संगीत का मूल ही माना गया है। सामवेद पूर्णतया गेय था और यह ऐसा वेद है, जिसके मंत्र या स्रोत यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते हुए गाये जाते थे।

गाये जाने वाले स्रोतों का विशेष नाम था– 'सामन'। इसी नाम से इस संहिता का नाम सामवेद पड़ा। सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से तीन प्रकार के स्वर तथा संगीत की दृष्टि से सात प्रकार के स्वरों का उल्लेख है। सामनों को गाने वाले लोग ऋत्विक या सामन कहलाते थे। 'नारदीय शिक्षा' नामक ग्रंथ में कहा गया है कि सामगान करने वाले हाथों की उंगलियों से और हाथों को दांये–बांये ले जाकर विभिन्न स्वरों का संकेत किया करते थे। भारतीय संगीत का प्रारम्भ इसी वैदिक युग से माना जाता है।[5]

पौराणिक काल में तैत्तरीय उपनिषद, ऐतरेव उपनिषद, शतपथ–ब्राहमण जैसे कई ग्रंथों में भी संगीत का उल्लेख मिलता है। भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में संगीत की विस्तृत चर्चा की है। इसमें विविध वाद्यों का वर्णन, उनकी उत्पत्ति उनको बजाने के तरीकों, स्वर, छन्द, लय और विभिन्न तालों के बारे में विस्तार से लिखा है।[6]

संगीत एक यौगिक विधा है, जिसकी तीव्र, तीव्रतर ध्वनियां मनुष्य के सूक्ष्म स्नायु को झंकृत कर सुषुप्त कुण्डलियों को जाग्रत कर मानवता को आत्मोन्नति के चरम सीमा तक पहुँचा देने में, भौतिक शक्तियों से आध्यात्मिक श्रेष्ठता द्वारा मोक्ष के द्वार तक पहुँचाने में सहायक होती है। आध्यात्म तथा संगीत भारतीय परम्परा में दृढ़मूल रूप से अनुपाणित होता रहा है। प्राचीन काल की परम्परा के पीछे एक गूढ़ तत्व निहित है। प्राचीन जन संगीत की धुनों की आध्यात्मिक साधना के लिए प्रयोग वैदिक संगीत का वैशिष्ट्य माना जा सकता है।

संगीत का आधार प्राचीन समय से ही नाद को माना गया है। यही नाद–ब्रहम स्वरूप है तथा इसी परम ब्रहम को प्राप्त करने तथा मोक्ष की प्राप्ति हेतु संगीत एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संगीत कला का अंतिम लक्ष्य भौतिकता से ऊपर उठकर मानव में आध्यात्मिक चेतना को जागृत करना है। आध्यात्मिक स्वरूप में संगीत कला को सर्वोपरि माना गया है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति की विशिष्टता भारतीय जीवन पद्धति में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। हमारी संस्कृति सदाचारपरक पुरातन तथा समृद्ध है। प्राचीन काल से शाश्वत प्रवाहमान संस्कृति, कला एवं संगीत के स्वरूप को सभी जनों ने आज भी उन्मुक्त हृदय से स्वीकारा है। परिणामस्वरूप भारतवर्ष आज भी विश्व में अपना उत्कृष्ट स्थान बनाये हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा स्वतन्त्र, भारतीय संगीत– एक ऐतिहासिक विश्लेषण, पृष्ठ संख्या–07, वर्ष–1988*
2. *शर्मा सुनीता, भारतीय संगीत का इतिहास आध्यात्मिक एवं दार्शनिक, पृष्ठ संख्या–25, वर्ष–1996*
3. *वर्मा भगवत शरण, संगीत पत्रिका भारतीय इतिहास में संगीत– पृष्ठ संख्या–03, मई 1993*
4. *वर्मा भगवत शरण, संगीत पत्रिका भारतीय इतिहास में संगीत– पृष्ठ संख्या–03, मई 1993*
5. *जोशी मंजरी, भारतीय संगीत की परम्परा, पृष्ठ संख्या– 7, 8*
6. *जोशी मंजरी, भारतीय संगीत की परम्परा, पृष्ठ संख्या– 09*